परमात्म ऊर्जा

अपने को विशेष आत्मायें अर्थात् विशेषता दिखलाने वाली समझती हो? 'पास विद् ऑनर' बनने का लक्ष्य और बाप का शो दिखलाने का लक्ष्य तो सभी का ही है लेकिन आप लोग विशेष क्या नवीनता दिखायेंगी? नवीनता व विशेषता यही दिखाना व दिखाने का निश्चय करना कि कोई भी विघ्न में व कोई भी कार्य में मेहनत न लेकर और ही अन्य आत्माओं को भी निर्विघ्न और हर कार्य में मददगार बनाते सहज ही सफलतामूर्त बनेंगे और बनायेंगे। अर्थात् सदा सहजयोग, सदा बाप के स्नेही, बाप के कार्य में सहयोगी, सदा सर्व शक्तियों को धारण करते हुए श्रृंगारमूर्त, शस्त्रधारी शक्ति बन अपने चित्र से, चलन से बाप के चरित्र और कर्त्तव्य को प्रत्यक्ष करना है। ऐसी प्रतिज्ञा अपने से की है? छोटी-छोटी बातों में मेहनत तो नहीं लेंगे? किसी भी माया के आकर्षित रूप में धोखा तो नहीं खायेंगे? जो स्वयं धोखा खा लेते हैं वह औरों को धोखे से छुड़ा नहीं पाते। सदैव यही स्मृति रखो कि हम दुःख हर्ता सुखकर्ता के बच्चे हैं। किसके भी दुःख को हल्का करने वाले स्वयं कब भी, एक सेकण्ड के लिए भी, संकल्प व स्वप्न में भी दुःख की लहर में नहीं आ सकते हैं। अगर संकल्प में भी दुःख की लहर आती है तो सुख के सागर बाप की सन्तान कैसे कहला सकते हैं? क्या बाप की महिमा में यह कब वर्णन करते हो कि सुख का सागर हो लेकिन कब-कब दुःख की लहर भी आ जाती है? तो बाप समान बनना है ना! दुःख की लहर आती है अर्थात् कहां न कहां माया ने धोखा दिया। तो ऐसी प्रतिज्ञा करनी है। शक्ति रूप नहीं हो क्या? शक्ति कैसे मिलेगी? अगर सदा बुद्धि का सम्बन्ध एक ही बाप से लगा हुआ है तो सम्बन्ध से सर्व शक्तियों का वर्सा अधिकार के रूप में अवश्य प्राप्त होता है लेकिन अधिकारी समझकर हर कर्म करते रहें तो कहने व संकल्प में मांगने की इच्छा नहीं रहेगी। अधिकार प्राप्त न होने कारण, कहां न कहां किसी प्रकार की अधीनता है। अधीनता होने के कारण अधिकार प्राप्त नहीं होता है। चाहे अपने देह के भान की अधीनता हो चाहे पुराने संस्कारों के अधीन हों, चाहे कोई भी गुणों की धारणा की कमी के कारण निर्बलता व कमज़ोरी के अधीन हों, इसलिए अधिकार का अनुभव नहीं कर पाते। तो सदैव यह समझो कि हम अधीन नहीं, अधिकारी हैं। पुराने संस्कारों पर, माया के ऊपर विजय पाने के अधिकारी हैं। अपने देह के भान व देह के सम्बन्ध व सम्पर्क जो भी हैं उनके ऊपर विजय पाने के अधिकारी हैं। अगर यह अधिकारीपन सदैव स्मृति में रहे तो स्वतः ही सर्व शक्तियों का, प्राप्ति का अनुभव होता रहेगा।

कथा सरिता

जीवन में सफलता का मूल मंत्र

स्कूल की पढ़ाई के दौरान रिंकू अपने परिवार के साथ एक छोटे से शहर में रहता था। पढ़ाई-लिखाई में उनका मन नहीं लगता था। अपनी कक्षा में हमेशा ही फिसड्डी रहता था। मुश्किल से किसी तरह पास होकर अगली कक्षा में पहुंचता था।

स्कूल के बच्चों से लेकर मोहल्ले तक लोग रिंकू का मज़ाक उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। रिंकू की पढ़ाई में कमज़ोरी से उनके माता-पिता भी दुःखी रहते थे। पढ़ाई में पिछड़ने का दुःख तो रिंकू को भी होता था, परन्तु कोशिश करने पर भी पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था।

हर तरफ से उपेक्षा और तिरस्कार से दुःखी होकर अंततः रिंकू ने पढ़ाई छोड़ने का मन बना लिया। अभी वह दसवीं कक्षा में था। उसकी पढ़ाई की जो स्थिति थी उससे बोर्ड की परीक्षा में उसे पास करने की उम्मीद लगभग न के बराबर थी। अपने जीवन से निराश रिंकू एक दिन जब स्कूल से घर लौट रहा था तो रास्ते में एक जगह रामायण की कथा हो रही थी। उस समय ओजस्वी स्वर में कथावाचक लंका कांड की व्याख्या कर रहे थे। कथावाचक के ओजस्वी स्वर से बुरे ख्यालों में खोये रिंकू की तंद्रा भंग हुई और वह सम्मोहित होकर कथा स्थल की ओर चल पड़ा।

कथा स्थल पर पहुंचकर वह जगह बनाते हुए आगे की पंक्ति में जा बैठा। रिंकू को देखकर कथावाचक मुस्कुराए और अपनी कथा को जारी रखा। रिंकू एकाग्रता से कथा के एक-एक शब्द को सुन रहा था। इस समय कथावाचक कह रहे थे, "समस्या बड़ी गंभीर थी, सागर तट पर श्री राम की सेना के सभी योद्धा लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि गंभीर सोच में डूबे थे। जटायू से यह तो पता लग गया था कि रावण सीता को लेकर दक्षिण दिशा में उफनते समुद्र के पास स्थित अपने राज्य लंका में गया है, परन्तु इस विशाल समुद्र को लांघकर लंका जाएगा कौन? समस्या विकट थी। तभी वहां पर उपस्थित सुग्रीव ने प्रभु राम से कहा कि हमारे बीच एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो समुद्र लांघकर लंका जा सकती है। तब श्री राम की जिज्ञासा को शांत करने के लिए सुग्रीव ने महाबली हनुमान की ओर देखा। सुग्रीव के संकेत से हनुमान जी सकपका गए। हनुमान जी की असमंजसता को भांपते हुए सुग्रीव ने कहा- हे पवनपुत्र! संभवतः आपको अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। बचपन में आपने सूर्य को एक फल समझते हुए एक छलांग में उसे सैकड़ों कोस दूर जाकर निगल लिया था तो फिर लंका की दूरी ही क्या है? ज़रूरत है तो सिर्फ आपको अपने विश्वास को जगाने की। आप जब अपने विश्वास को जगा लेंगे और मन में ठान लेंगे तो शक्ति आपमें स्वतः आ जाएगी, सुग्रीव की बात सुनकर एक तरफ जहाँ हनुमान जी को आश्चर्य हुआ वहीं उनका विश्वास भी जागा और वे समुद्र लांघने को तैयार हो गए। अगले ही दिन उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ समुद्र लांघते हुए लंका की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में मुश्किलें तो बहुत आईं फिर भी वे सभी मुश्किलों को परास्त करते हुए लंका में माँ सीता को ढूंढने में सफल हुए।"

वहाँ कथा वाचक के एक-एक शब्द को मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे रिंकू का नया जन्म हो चुका था। कुछ समय पहले तक जिस रिंकू की आँखों से निराशा के भाव झलक रहे थे, अब उसकी आँखों में चमक थी। उसके शरीर में उत्साह और स्फूर्ति का संचार होने लगा था। कथा खत्म होने के साथ ही वह तेजी से घर की ओर चल पड़ा। उसे सफलता का मूलमंत्र मिल चुका था। वह मन ही मन सोच रहा था कि जब हनुमान जी ने अपने विश्वास से शक्ति अर्जित कर समुद्र को लांघ लिया था, तो पढ़ाई कौन-सी बड़ी बाधा है। उसी दिन से रिंकू ने प्रण कर लिया कि वह ध्यान लगा कर खूब पढ़ेगा और सफलता अवश्य प्राप्त करेगा। उसकी मेहनत रंग लाई। अपनी कक्षा में सबसे फिसड्डी रहने वाला छात्र रिंकू दसवीं की बोर्ड परीक्षा में सबसे अव्वल आया। इसके बाद रिंकू ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और ज़िंदगी में हमेशा अव्वल ही आता रहा। वह लोक सेवा की परीक्षा में भी प्रथम स्थान पर आया और अपने आप पर विश्वास की बदौलत वह सरकारी महकमे में भी पदोन्नति पाते हुए ऊंचे ओहदे तक पहुंच गया।

शिक्षा : जब किसी व्यक्ति में विश्वास का संचार होता है तो उसमें शक्ति अपने आप संचालित होने लगती है। फिर जब तन और मन में शक्ति यानी ऊर्जा का संचार होता है तो मुश्किल काम भी असान हो जाता है।

पुखरायां-उ.प्र.। राकेश सचान,कैबिनेट मंत्री,उत्तर प्रदेश को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता बहन। साथ हैं महिला जिला अध्यक्ष श्रीमती रेणुका सचान, नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि करुणा शंकर तथा अन्य।

देहरादून-उत्तराखण्ड। इंटरनेशनल गुडविल सोसायटी ऑफ इंडिया,उत्तराखंड चैप्टर द्वारा ब्र.कु. मंजू दीदी को समाज के सतत् विकास में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए उत्तराखंड रत्नश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 250 से अधिक शहर की प्रसिद्ध हस्तियां शामिल रहीं।

लखनऊ-उ.प्र.। पूर्व डेप्युटी चीफ मिनिस्टर डॉ. दिनेश शर्मा को ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा रक्षासूत्र बांधा गया व ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

बहल-हरियाणा। श्री अलख आश्रम बहल के महंत विकास गिरी जी महाराज को सेवाकेन्द्र पर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन।

इगलास-उ.प्र.। प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमलता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. विमल बहन।

राजसमंद-राज.। जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन।

भवानीगढ़-पंजाब। योजना आयोग के चेयरमैन गुरमेल सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेंद्र बहन।